रविवार 28 जुलाई, 2019

विषय — सत्य

स्वर्ण पाठः 3 यूहन्ना : 4

"मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूं, कि मेरे लड़के-बाले सत्य पर चलते हैं।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 100 : 1-5

1 हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा का जयजयकार करो!
2 आनन्द से यहोवा की आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!
3 निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं; हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं॥
4 उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!
5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करूणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यूहन्ना 8 : 32

32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

2. I राजा 18 : 20-39

20 तब अहाब ने सारे इस्राएलियों को बुला भेजा और नबियों को कर्म्मेल पर्वत पर इकट्ठा किया।

21 और एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो। लोगों ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही।

22 तब एलिय्याह ने लोगों से कहा, यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह गया हूँ; और बाल के नबी साढ़े चार सौ मनुष्य हैं।

23 इसलिये दो बछड़े लाकर हमें दिए जाएं, और वे एक अपने लिये चुनकर उसे टुकड़े टुकड़े काट कर लकड़ी पर रख दें, और कुछ आग न लगाएं; और मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके लकड़ी पर रखूंगा, और कुछ आग न लगाऊंगा।

24 तब तुम तो अपने दवता से प्रार्थना करना, और मैं यहोवा से प्रार्थना करूंगा, और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे। तब सब लोग बोल उठे, अच्छी बात।

25 और एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा, पहिले तुम एक बछड़ा चुनकर तैयार कर लो, क्योंकि तुम तो बहुत हो; तब अपने देवता से प्रार्थना करना, परन्तु आग न लगाना।

26 तब उन्होंने उस बछड़े को जो उन्हें दिया गया था ले कर तैयार किया, और भोर से ले कर दोपहर तक वह यह कह कर बाल से प्रार्थना करते रहे, कि हे बाल हमारी सुन, हे बाल हमारी सुन! परन्तु न कोई शब्द और न कोई उत्तर देने वाला हुआ। तब वे अपनी बनाई हुई वेदी पर उछलने कूदने लगे।

27 दोपहर को एलिय्याह ने यह कहकर उनका ठट्ठा किया, कि ऊंचे शब्द से पुकारो, वह तो देवता है; वह तो ध्यान लगाए होगा, वा कहीं गया होगा वा यात्रा में होगा, वा हो सकता है कि सोता हो और उसे जगाना चाहिए।

28 और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार पुकार के अपनी रीति के अनुसार छुरियों और बछियों से अपने अपने को यहां तक घायल किया कि लोहू लुहान हो गए।

29 वे दोपहर भर ही क्या, वरन भेंट चढ़ाने के समय तक नबूवत करते रहे, परन्तु कोई शब्द सुन न पड़ा; और न तो किसी ने उत्तर दिया और न कान लगाया।

30 तब एलिय्याह ने सब लोगों से कहा, मेरे निकट आओ; और सब लोग उसके निकट आए। तब उसने यहोवा की वेदी की जो गिराई गई थी मरम्मत की।

31 फिर एलिय्याह ने याकूब के पुत्रों की गिनती के अनुसार जिसके पास यहोवा का यह वचन आया था,

32 कि तेरा नाम इस्राएल होगा, बारह पत्थर छांटे, और उन पत्थरों से यहोवा के नाम की एक वेदी बनाई; और उसके चारों ओर इतना बड़ा एक गड़हा खोद दिया, कि उस में दो सआ बीज समा सके।

33 तब उसने वेदी पर लकड़ी को सजाया, और बछड़े को टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर धर दिया, और कहा, चार घड़े पानी भर के होमबलि, पशु और लकड़ी पर उण्डेल दो।

34 तब उसने कहा, दूसरी बार वैसा ही करो; तब लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया। फिर उसने कहा, तीसरी बार करो; तब लोगों ने तीसरी बार भी वैसा ही किया।

35 और जल वेदी के चारों ओर बह गया, और गड़हे को भी उसने जल से भर दिया।

36 फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जा कर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं।
37 हे यहावा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।
38 तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया।
39 यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है;

3. मत्ती 4 : 23

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।

4. मत्ती 9 : 18-25

18 वह उन से ये बातें कह ही रहा था, कि देखो, एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा मेरी पुत्री अभी मरी है; परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी।
19 यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया।
20 और देखो, एक स्त्री ने जिस के बारह वर्ष से लोहू बहता था, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया।
21 क्योंकि वह अपने मन में कहती थी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी।
22 यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा; पुत्री ढाढ़स बान्ध; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; सो वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।
23 जब यीशु उस सरदार के घर में पहुंचा और बांसली बजाने वालों और भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा तब कहा।
24 हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है; इस पर वे उस की हंसी करने लगे।
25 परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उस ने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी।

5. यशायाह 25 : 1, 9

1 हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहूंगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तू ने आश्चर्यकर्म किए हैं, तू ने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियां की हैं।

9 और उस समय यह कहा जाएगा, देखो, हमारा परमेश्वर यही है; हम इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है; हम उसकी बाट जोहते आए हैं। हम उस से उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे।

6. भजन संहिता 117 : 1, 2

1 हे जाति जाति के सब लोगोंयहोवा की स्तुति करो! हे राज्य राज्य के सब लोगो, उसकी प्रशंसा करो!

2 क्योंकि उसकी करूणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है; और यहोवा की सच्चाई सदा की है याह की स्तुति करो!

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 493 : 1 (क्रिश्चियन साइंस)-2, 6-8

क्रिश्चियन साइंस तेजी से सच को विजयी दिखाता है ... भौतिक ज्ञान के सभी प्रमाण और भौतिक ज्ञान से प्राप्त सभी ज्ञान विज्ञान को सभी चीजों के अमर सत्य तक पहुंचाना चाहिए।

2. 494 : 25-29

आप इन दोनों सिद्धांतों में से कौन सा आदमी स्वीकार करने के लिए तैयार हैं? एक नश्वर गवाही है, जो बदल रहा है, मर रहा है, असत्य है। दूसरा शाश्वत और वास्तविक साक्ष्य है, सत्य का संकेत, इसकी गोद अमर फलों से ऊँची है।

3. 367 : 30-32

क्योंकि सत्य अनंत है, त्रुटि को कुछ भी नहीं के रूप में जाना जाना चाहिए। क्योंकि सत्य अच्छाई में सर्वशक्तिमान है, त्रुटि, सत्य के विपरीत, कोई शक्ति नहीं है।

4. 368 : 2-5

विज्ञान से प्रेरित विश्वास इस तथ्य में निहित है कि सत्य वास्तविक है और त्रुटि असत्य है। सत्य से पहले त्रुटि कायरता है।

5. 82 : 31-11

शक्ति के अधिक से अधिक विकास के लिए पाप और कामुकता की दुनिया में, यह बुद्धिमानी से विचार करना है कि क्या यह मानव मन है या दिव्य मन है जो एक को प्रभावित कर रहा है। यहोवा के नबियों ने जो किया, बाल के उपासक करने में असफल रहे; लेकिन धोखे और भ्रम ने दावा किया कि वे ज्ञान के कार्य के बराबर हो सकते हैं।

विज्ञान केवल अविश्वसनीय अच्छे और बुरे तत्वों की व्याख्या कर सकता है जो अब प्रकट हो रहे हैं। इन बाद के दिनों की त्रुटि से बचने के लिए मनुष्यों को सत्य की शरण लेनी चाहिए। कुछ भी समझ के बिना अंध विश्वास की तुलना में क्रिश्चियन साइंस के लिए अधिक विरोधी नहीं है, इस तरह के विश्वास के लिए सत्य छुपाता है और त्रुटि का निर्माण करता है।

6. 380 : 5-7, 28-31

सत्य युगों की चट्टान है, कोने का पत्थर है, "परंतु जिस पर वह गिरेगा, उसे वह पीस डालेगा॥"

यह मानने से अधिक निराशाजनक कुछ भी नहीं है कि ईश्वर के विपरीत कोई शक्ति है, या भलाई है, और यह कि ईश्वर इस विरोध शक्ति का उपयोग स्वयं के खिलाफ, जीवन, स्वास्थ्य, सद्भाव के खिलाफ करने की शक्ति के साथ करता है।

7. 372 : 26-32

क्राइस्टियन साइंस में, सत्य का एक खंडन घातक है, जबकि सत्य का एक औचित्य है और उसने हमारे लिए जो किया है वह एक प्रभावशाली मदद है। यदि गर्व, अंधविश्वास या कोई त्रुटि प्राप्त लाभों की ईमानदार मान्यता को रोकती है, तो यह बीमार लोगों की वसूली और छात्र की सफलता में बाधा होगी।

8. 191 : 30-32

मन का भौतिकता के साथ कोई संबंध नहीं है, और इसलिए सत्य शरीर की बीमारियों को बाहर निकालने में सक्षम है।

9. 458 : 14-19

देवत्व हमेशा तैयार है। संपूरक परतुस सत्य का आदर्श वाक्य है। इस तरह की विपत्ति से पीड़ित होने के बाद, लेखक इसे क्रिश्चियन साइंस से बाहर रखने की इच्छा रखता है। सत्य की दोधारी तलवार को "जीवन के वृक्ष" की रक्षा के लिए हर दिशा में मुड़ना चाहिए।

10. 25 : 13-16

यीशु ने प्रदर्शन के द्वारा जीवन का मार्ग सिखाया, कि हम समझ सकते हैं कि यह दिव्य सिद्धांत कैसे बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को जन्म देता है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है।

11. 229 : 23-10

यदि परमेश्वर मनुष्य को बीमार होने का कारण बनता है, तो बीमारी अच्छी होनी चाहिए, और इसके विपरीत, स्वास्थ्य, बुराई होनी चाहिए, क्योंकि वह जो बनाता है वह अच्छा है और हमेशा के लिए खड़ा

रहेगा। यदि परमेश्वर के नियम का उल्लंघन बीमारी पैदा करता है, तो बीमार होना सही है; और हम नहीं कर सकते अगर हम करेंगे, और अगर हम नहीं कर सकते, तो ज्ञान के फरमान को रद्द करना चाहिए। यह नश्वर मन की धारणा का परिवर्तन है, न कि पदार्थ के नियम का और न ही दिव्य मन का, जो बीमारी के विश्वास का कारण बनता है। उपाय सत्य है, भौतिक नहीं, - सत्य यह है कि बीमारी असत्य है।

यदि बीमारी वास्तविक है, तो यह अमरता से संबंधित है; अगर यह सच है, यह सत्य का एक हिस्सा है। क्या आप सत्य की गुणवत्ता या स्थिति को नष्ट करने के लिए दवाओं के साथ या बिना प्रयास करेंगे? लेकिन अगर बीमारी और पाप भ्रम हैं, तो इस नश्वर सपने से जागृति, या भ्रम, हमें स्वास्थ्य, पवित्रता और अमरता में लाएगा। यह जागृति हमेशा के लिए मसीह के आने की है, सत्य का उन्नत रूप है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमारों को भर देता है। यह वह मोक्ष है जो ईश्वर के माध्यम से आता है, दिव्य सिद्धांत, प्रेम, जैसा कि यीशु द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

12. 271 : 7-10

यीशु ने अपने शिष्यों को हिदायत दी कि वे भौतिक के बजाय मन के माध्यम से बीमारों को चंगा करें। वह जानता था कि दर्शन, विज्ञान, और ईसाई धर्म का प्रमाण सत्य में हैं, सभी धर्मों को मिटाते हुए।

13. 231 : 3-11

जब तक एक बीमार सही तरीके से नहीं मिलता है और सच्चाई से काफी हद तक दूर हो जाता है, तब तक बीमार पर विजय नहीं मिलती है। यदि परमेश्वर पाप, बीमारी, और मृत्यु को नष्ट नहीं करता है, तो वे नश्वर लोगों के दिमाग में नष्ट नहीं होते हैं, बल्कि इस तथाकथित मन को अमर लगते हैं। भगवान जो नहीं कर सकता, उसके लिए आदमी को प्रयास करने की जरूरत नहीं है। यदि परमेश्वर बीमारों को नहीं चंगा करता है, तो वे चंगे नहीं होते हैं, क्योंकि कोई भी कम शक्ति अनंत-शक्ति के बराबर नहीं होती है; लेकिन परमेश्वर, सत्य, जीवन, प्रेम, धर्मी की प्रार्थना के माध्यम से बीमारों को चंगा करता है।

14. 412 : 13-18

क्राइस्टियन साइंस और दिव्य प्रेम की शक्ति सर्वशक्तिमान है। यह वास्तव में पकड़ को नष्ट करने और बीमारी, पाप और मृत्यु को नष्ट करने के लिए पर्याप्त है।

बीमारी को रोकने या उसे ठीक करने के लिए, दिव्य आत्मा की सत्य की शक्ति, भौतिक इंद्रियों के सपने को तोड़ना चाहिए।

15. 406 : 20 (हम)-25

हम, और अंततः सत्य की सर्वोच्चता की हर दिशा में खुद को लाभ उठाने के लिए उठ सकते हैं, मौत पर जीवन, और बुराई पर अच्छाई, और यह विकास तब तक चलेगा जब तक हम भगवान के विचार की पूर्णता तक नहीं पहुंचते, और कोई और डर नहीं कि हम बीमार होंगे और मर जाएंगे।

16. 545 : 27-30

सत्य के पास सभी त्रुटियों के लिए एक उत्तर है, - पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए: "तू मिट्टी [शून्य]तो है और मिट्टी ही में फिर मिल [शून्य] जाएगा।"

17. 538 : 3-10

सत्य को त्रुटि को सभी स्वार्थों से बाहर निकालना चाहिए और यह ऐसा करता है। रखवाली और मार्गदर्शन करने से, सत्य दोधारी तलवार है। सत्य उचित मेहमानों को नोट करने के लिए समझ के द्वार पर करूब ज्ञान रखता है।

दया और न्याय के साथ दीप्ति, सत्य की तलवार चमकती है और सत्य और त्रुटि के बीच, भौतिक और आध्यात्मिक- असत्य और वास्तविक के बीच की अनंत दूरी को इंगित करती है।

18. 293 : 28-31

क्रिश्चियन साइंस सत्य और उसके वर्चस्व, सार्वभौमिक सद्भाव, ईश्वर की पवित्रता, अच्छे और बुरे की बुराई को प्रकाश में लाता है।

19. **380 : 4** केवल

सत्य हमेशा विजयी होता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6